तर्ज--वो दिल कहाँ से लाऊँ

माशूक रुह ये चाहे गुण तेरे मैं गाऊं
गुण बढ़ते जाते पल पल गुण कैसे तेरे गाऊं

1--इक कंकरी अर्श की चौदह तबक उड़ावे
हक हादी और रूहें नासूत में है आये
मेहर के है वो सागर मेहर मैं क्या बताऊं

2--मेहर का खेल दिखाया चरणों तले बिठा के
नासूत में दिये है सुख अर्श के वो सारे
अनहोनी हक की देखो इस मुख से क्या बताऊं

3--इक तुम्ही तुम हो प्रीतम बिन तेरे कुछ नही है
श्यामा जी में तुम्ही हो रुहों के दिल मे तुम्ही
है इश्क हक का कितना ये कैसे मैं बताऊं

4--मालिक जो दो जहां के रूहों के है वो आशिक
इन रूहों की सिफत खुद करते है अपने मुख हक
मेरी जुबां फना की गुण कैसे तेरे गाऊं

Nijanand App